

## 13810 - एक ईसाई औरत अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्मदिन के बारे में प्रश्न करती है और मुसलमनों के लिए उस दिन का क्या महत्त्व है ?

### प्रश्न

अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिस दिन पैदा हुए उसका क्या महत्त्व है, तथा उस दिन को कब और कैसे मनाया जाता है ?

### विस्तृत उत्तर

पहली बात:

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर्व मानवजाति की ओर अल्लाह के संदेश हैं, जिन के द्वारा अल्लाह तआला ने लोगों को अंधेरी से निकाल कर रोशनी की ओर ला खड़ा किया, और उनके हाथों को पकड़ कर उन्हें पथभ्रष्टता एवं गुमराही से बचाकर हिदायत (सीधे मार्ग) की ओर मार्गदर्शन किया। और अधिक जानकारी प्रश्न संख्या (11575) के उत्तर से प्राप्त कर सकते हैं।

और संभव है कि यह प्रश्न इस्लाम धर्म के बारे में विस्तृत खोज की शुरुआत, उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने और अधिक से अधिक अध्ययन करने के लिए एक प्रयास सिद्ध हो। तथा आप कुरआन का अनुवाद खोज करने का उत्सुक बनें ताकि आप इस दीन-ए-हानीफ के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें। निश्चित तौर पर हमारी प्रसन्नता उस समय इसके कई गुना अधिक बढ़ जायेगी जब आप इस धर्म में प्रवेश कर हमारी इस्लामी बहन हो जायेंगी।

दूसरी बात: इस्लाम के अंदर उपासनार्ये (इबादात) एक महान आधार पर स्थपित हैं और वह ये है कि किसी भी मनुष्यके लिए जाइज़ (धर्मसंगत) नहीं है कि वह अल्लाह तआला की उपासना (इबादात) किसी ऐसी चीज़ के द्वारा करे जिसको न तो अल्लाह तआला ने अपनी किताब (कुरआन) में वैध किया है और न ही उसके ईशदूत एवं संदेशा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको प्रस्तुत किया है। और जिस मनुष्य ने अल्लाह सर्वशक्तिमान की उपासना (इबादात) किसी ऐसी चीज़ के द्वारा किया जिसका अल्लाह सर्वशक्तिमान और उसके पैगंबर ने आदेश नहीं दिया है तो अल्लाह सर्वशक्तिमान उससे उस चीज़ को स्वीकार नहीं करेगा। पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इसी चीज़ की सूचना दी है। चुनांचे आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है की उन्होंने ने कहा कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: "जिस ने हमारी इस शरीअत में कोई ऐसी चीज़ ईजाद की जिसका इस से कोई संबंध नहीं है तो उसे रद्द (अस्वीकृत) कर दिया जाये गा। इसे इमाम बुखारी ने (किताबुस्सुल्ह / हदीस संख्या: 2499) रिवायत किया है।

इन्हीं उपासनाओं में से त्योहार (पर्व) भी है। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने हमारे लिए दो त्योहार निर्धारित किए (वैध ठहराये) हैं जिनमें हम जश्न (उत्सव) और खुशी मनाते हैं, और इन दोनों दिनों के अलावा किसी अन्य दिन में जश्न (उत्सव) मनाना वैध नहीं है।

जहाँ तक उस दिन का उत्सव मनाने का प्रश्न है जिस दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ, तो इस संदर्भ में इस बात का जानना उचित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे लिए इस दिन का जश्न मनाना वैध नहीं ठहराया है, और न तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं उस दिन का उत्सव मनाया है और न ही आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने। वे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारी अपेक्षा व्यापक महबूत करने वाले थे इसके बावजूद उन्होंने ने इस दिन का उत्सव नहीं मनाया। अतः हम भी अल्लाह सर्वशक्तिमान के आदेश का पालन करते हुए इस दिन का उत्सव नहीं मनायेंगे, क्योंकि अल्लाह ने हमें अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेशों का पालन करने का आदेश दिया है। अल्लाह ने फरमाया:

﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا﴾ [سورة الحشر: 7]

"रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो कुछ तुम्हें दें उसे ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दें उससे रुक जाओ।" (सूरतुल हश्र: 7).

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है: "तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत या फता (पथ प्रदर्शित) खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो, उसे दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो। और धर्म में नयी ईजाद कर ली गयी चीज़ों (नवाचार) से बचो, क्योंकि धर्म में हर नई ईजाद कर ली गई चीज़ बिद्अत है, और हर बिद्अत गुमराही (पथ भ्रष्टता) है।" इस हदीस को अबू दाऊद (अस्सुनह/ 3991) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने "सहीह अबु दाऊद" (हदीस संख्या: 3851) में इसे सहीह कहा है। तथा जिन चीज़ों से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महबूत के स्तर का पता चलता है पता चलता है, उन्हीं में से एक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हर उस चीज़ में आज्ञा पालन करना है जिसका आपने आदेश दिया है और मनाही की है, और उसी में से आपका आपके जन्मदिवस का जश्न न मनाने में आज्ञापालन करना है। प्रश्न संख्या (5219) और (10070) का उत्तर भी देखें।

और जो व्यक्ति उस दिन का सम्मान करना चाहे जिस दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जन्म हुआ तो शरई विकल्प को अपनाए और वह सोमवार के दिन रोज़ा रखना है, और वह केवल जन्मदिन के सोमवार के साथ विशिष्ट नहीं है बल्कि प्रत्येक सोमवार को रोज़ा रखना चाहिए।

अबू कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सोमवार के रोज़ा के विषय में पूछा गया तो आपने फरमाया:

उसी दिन मेरा जन्म हुआ तथा उसी दिन मुझ पर कुरआन अवतरित हुआ।" इसे मुस्लिम (हदीस संख्या: 1978) ने रिवायत किया है।

तथा जुमेरात के दिन लोगों के कर्म उठाए जाते हैं और अल्लाह के सम्मुख पेश किये जाते हैं।

इन सारी बातों का सारंश यह है कि: आप के जन्मदिन का जश्न मनाना न तो अल्लाह तआला ने धर्मसंगत (वैध) किया है और न ही अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वैध किया है। इसलिए अल्लाह का आज्ञापालन तथा उसके पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञापालन करते हुए मुसलमानों के लिए आप के जन्मदिन का जश्न मनाना जाइज (वैध) नहीं है। हम अल्लाह सर्वशक्तिमान से आपके लिए सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन की प्रार्थना (दुआ) करते हैं। अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखता है।

शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-मुनज्जिद